I

## Lecture No:-61.

online class
Date- 21/7/2020
Time- 10 to 10:50 AM

Topic,

(1) Kumaril and Prabhakar,

Dr. Sunita Kumari
Department of Philosophy
B.A part-I
paper-I (H.)
A.N.D. College Shahpur Patory, Samastipur,

Ans:-> मीमांसा दर्शन में ज्ञान को स्वतः प्रमाण माना गया है। कुमारिल का मत है कि ज्ञान का प्रमान्य उसके बोधस्वरूप होने में है और ज्ञान का अप्रमान्य कारणगत दोष में होता है। ज्ञान स्वतः प्रमाण है। उसका अप्रमान्य तब ज्ञात होता है जब उसके कारणों में दोषों का ज्ञान होता है। जब कोई ज्ञान उत्पन्न होता है।

तब उसमें उसकी सत्यता का गुण भी अन्तर्भूत रहता है। किसी दूसरे ज्ञान के कारण उसका प्रमान्य नहीं होता प्रत्यक्ष,

P.T.O.

Scanned with CamScanner

अनुमान आदि प्रमाणों के द्वारा ज्ञान उत्पन्न होता है, उसकी सफलता में स्वभावतः हम बिना जाँच-पड़ताल के विश्वास करने लगते हैं।

ज्ञान का प्रामाण्य उस ज्ञान के उत्पादित सामग्री में ही विद्यमान रहता है। → प्रमाण स्वतः उत्पद्यते, ज्योंहि ज्ञान उत्पन्न होता है, त्योंहि उसके प्रामाण्य का भी ज्ञान उत्पन्न हो जाता है। :→ प्रमाण्य स्वतः ज्ञायते।

परन्तु ज्ञान के मिथ्यात्व का ज्ञान हमें अनुमान से होता है। साधारणतः इसरे ज्ञान के द्वारा यह मालूम होता है कि ज्ञान भ्रमपूर्ण है, दूसरे शब्दों में, उस ज्ञान के आधार में कोई त्रुटि है। ऐसी अवस्था में आधार के दोष से हम ज्ञान के मिथ्या होने का अनुमान करते हैं।

कुमारिल (Kumaril) की

P.T.O.

प्रभाकर (Prabhakar) का भी मत है कि ज्ञान सदैव स्वतः प्रमाण होता है। परन्तु जब वस्तु के स्वरूप के साथ की संगति नहीं होती तब उसका स्वतः प्रमाण्य असिद्ध होता है। दूसरे शब्दों में ज्ञान का अप्रमाण्य परतः अर्थात् वस्तु के स्वरूप से असंगति होने के कारण होता है।

मीमांसा इस विचार का खण्डन करते हुए कहते हैं कि ऐसा मानने में अनावस्था दोष (Infinite Regress) का सामना करना अनिवार्य हो जाता है।

यदि "अ" के प्रामाण्य के लिए "ब" को मानना पड़े तथा "ब" के लिए "स" को मानना पड़े तो इस क्रिया की समाप्ति नहीं होती। इसका फल यह होगा कि किसी का प्रमाण्य सिद्ध नहीं होगा तथा जीवन असम्भव हो जाएगा। अतः न्याय का स्वतः प्रामाण्यवाद खण्डित हो जाता है।

END